शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 8
Issue 2
15 July, 2017

नरेन्द्र कोहली के रामकथात्मक उपन्यासों में चित्रित नारी के शोषण का स्वरूप एंव उसका प्रतिकार

बीज शब्द :

लैंगिक विभेदीकरण, अर्द्धनारीश्वर स्वरूप, समकालीन, महिला सशक्तिकरण, पितृसत्तात्मक समाज।

एक सजग और संवेदनशील उपन्यासकार के रूप में नरेन्द्र कोहली ने अपने पौराणिक उपन्यासों के माध्यम से प्राचीन समय में नारी की स्थिति का सजीव, प्रमाणिक एंव कलात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है। इन्होंनें पौराणिक कथा के माध्यम से अपने समकालीन आधुनिक नारी-जीवन के विभिन्न पहलुओं को भी सफलतापूर्वक उजागर करने की कोशिश की है। रामकथा पर आधृत अपने उपन्यास 'अभ्युदय' में एक ओर जहाँ उन्होंनें अहिल्या, सीता, कौशल्या आदि पौराणिक नारी पात्रों के माध्यम से अपने समकालीन पुरूष-प्रधान समाज में नारी के ऊपर हो रहे शोषण को प्रदर्शित किया है, वहीं दूसरी ओर पुरूष प्रधान समाज द्वारा हो रहे स्त्रियों के प्रति अनैतिक बर्ताव का विरोध सीता के माध्यम से करवाया है। कोहली जी के रामकथात्मक उपन्यासों में आधुनिक नारी की स्त्री-स्वातंत्र्य को लेकर उठते विद्रोहपूर्ण स्वर की अभिलाषाएँ अभिव्यक्त हुई हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी की दशा-दिशा का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

*****

रेखा रानी
शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया,
बिहार (भारत)
E-mail : rrani140489@gmail.com

नरेन्द्र कोहली के रामकथात्मक उपन्यासों में चित्रित नारी के शोषण का स्वरूप एंव उसका प्रतिकार

समाज में नारी को त्याग की प्रतिमूर्ति माना जाता है, जिसका संपूर्ण जीवन परिवार की सेवा में व्यतीत होता है। समाज में नारी को बाह्य तौर पर देवी, अर्द्धांगिनी, सहधर्मिनी, गृहलक्ष्मी, रानी, त्याग की प्रतिमूर्ति, ममता की मूर्त इत्यादि नाना विशेषणों से मंडित तो किया जाता रहा है, किन्तु आंतरिक रूप से उसका शोषण भी किया जाता रहा है। समाज में सदियों से पुरूषों की तुलना में नारी को कमतर और कमजोर समझा गया है। कहने को तो हमारा देश इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुका है। लेकिन नारी के विषय में वह आज भी वही सोच रखता है, जो सदियों पहले रखता था। शिक्षा के बढ़ते विकास ने स्त्रियों की स्थिति को सुधारने में अहम् भूमिका निभाई है। किन्तु, फिर भी समाज उन स्त्रियों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता, जो अपने जीवन के फैसले स्वयं लेती हैं या जो पुरूषों से अलग अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व बनाना चाहती हैं। आज भी समाज उन्हें पुरूषों से कमतर समझकर, उन्हें परतंत्रता की बेड़ियों से जकड़ना चाहता है। शायद यही कारण है कि स्त्री से जुड़ें लैंगिक विभेदीकरण के मुद्दों पर बार-बार चर्चा करने की आवश्यकता महसूस होती है। ''लैंगिक विभेदीकरण अथवा लैंगिक असमानता को सामान्य शब्दों में इस तरह परिभाषित किया जा सकता है कि लैंगिक आधार पर महिलाओं के साथ भेदभाव करना। समाज में परम्परागत रूप से महिलाओं को कमजोर जाति-वर्ग के रूप में मानना।''[1] चूकिं स्त्री हमारे समाज का एक अभिन्न अंग है और साहित्य समाज का दर्पण होता है। अत: हमारा साहित्य, समाज में लगातार हो रहे नारी के शोषण की सच्ची तस्वीर दिखाने में पूरी तरह सक्षम है। शायद इसी कारण युग-युग से पीड़ित व प्रताड़ित नारी जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण साहित्यिक रचनाकार बड़ी ही संवेदनशीलता के साथ करते आये हैं।

''उपन्यास के क्षेत्र में स्त्री समस्याओं पर लिखे गए उपन्यासों की एक बेहद उर्वरा जमीन हिन्दी के रचनात्मक साहित्य में देखी गई है। प्रेमचंद, अज्ञेय, जैनेद्र जी ने बेहद जीवंत स्त्री पात्र अपने उपन्यासों, कहानियों में रचे हैं।''[2] अस्सी के दशक में राम के पौराणिक कथा पर आधृत उपन्यास 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' और 'युद्ध' को लिखकर नरेंद्र कोहली जी ने अपने तत्कालीन समाज के नारी के जिस स्वरूप को दुनिया के सामने रखा, वही स्वरूप इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करते भारतीय समाज में अभी भी काबिज है।

'अभ्युदय' में संकलित 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' और 'युद्ध' उपन्यास यद्यपि राम की पौराणिक कथा पर आधृत है, तथापि इन रामकथाओं में नारी के शोषित स्वरूपों के वर्णन को प्रमुखता दी गई है। समाज में नारी पर हो रहे शोषण और अत्याचार को कोहली जी ने पौराणिक रामकथा के संदर्भो एवं प्रचलित नारी पात्रों के माध्यम से उजागर करने का एक सफल प्रयास किया है। उपन्यास की कथाक्रम में ऐसे अनेक प्रसंग आते हैं जहाँ कथा में आये अनेक पात्र कोहली जी के तद्‌युगीन समाज में नारी के स्वरूप की सच्ची और एक दर्दनाक चित्र को खींचते नजर आते हैं।

वर्तमान समय में प्रत्येक दिन कितनी ही स्त्रियाँ, किशोरियाँ, बच्चियाँ समाज के दरिंदो की वासना का शिकार बनती हैं। उनका अपरहण कर उन्हें शीलभंग करने एवं उनकी हत्या करने की घटनाएँ प्रत्येक युग में देखने और सुनने को मिलती हैं। कोहली जी ने अपने युग में भी स्त्रियों पर हो रहे शोषणों के इस स्वरूपों को देखा था। शायद यही कारण है कि उन्होंने अपने पहले ही उपन्यास 'दीक्षा' में राजा दशरथ के राज्य की सीमा के भीतर स्थित एक ग्राम में रहने वाले निषाद जाति के एक परिवार की स्त्रियों पर राक्षसी प्रवृति वाले आर्य युवकों द्वारा किये गए जघन्य कार्य को आजानुबाहु के माध्यम से वर्तमान पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। आजानुबाहु, विश्वामित्र को इस जघन्य कार्य की सूचना देते हुए कहते हैं कि- अवसर देखकर आर्य युवकों का दल ग्राम में घुस आया।.........अकेला अस्वस्थ गहन क्या करता। उन्होंने उसे पकड़कर एक खम्भे के साथ बांध दिया। उसकी वृद्धा पत्नी, युवा पुत्रवधुओं तथा बाला दुहिता को पकड़कर गहन के सम्मुख ही नग्न कर दिया। उन्होंने वृद्ध गहन की आँखों के सम्मुख बारी-बारी उन स्त्रियों का शील-भंग किया। फिर उन्होंने जीवित गहन को आग लगा दी और जीवित जलते हुए गहन की उस चिता में लौह शलाकाएं गर्म कर-करके उन स्त्रियों के गुप्तांगों पर उनकी जाति चिन्हित की....।''[3] सिद्धाश्रम में आर्य शासनकर्मियों द्वारा निषाद स्त्रियों पर किये गये उक्त यौन

1. www.hindikidunia.com/social-issues/gender-inequality - भारत में लिंग असमानता

2. http://m.hind-i.webdunia.com/article/महिला-रचनाकारों-के-नारी-पात्र-1

3. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग-1, 'दीक्षा' खण्ड, डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली, सं0 2014 पृष्ठ सं0 17

वासना–उत्पीड़न का यह वर्णन बिहार में घटित आदिवासी स्त्रियों के यौन–उत्पीड़न से उद्वेलित होकर समकालीन परिवेश के संदर्भ में नरेन्द्र कोहली जी के द्वारा लिखा गया है। सदियों से नारियों के ऊपर हो रहे इस तरह के जघन्य शोषण के कारण पितृसत्तात्मक समाज की व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह लगते आये हैं।

'अवसर' के एक प्रसंग में वन जाने के क्रम में सीता की भेंट एक ऐसी कन्या से होती है जिसे धनिक वर्ग का कर्ज न चुका पाने के फलस्वरूप धनिक की दासी बनकर रहना पड़ता है। उसका सीता से ये कहना कि –''यह तो स्वामी की इच्छा पर है। वह चाहे मेरा विवाह कर दें। वह चाहें मुझे किसी दे दें। वे चाहे मेरा भोग करें। वे चाहें मुझे खा जाएँ ......''[4], उसकी उस विवशता को दर्शाता है जहाँ पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के कारण लड़कियों को सब कुछ सहज ही स्वीकार करना पड़ता है। कोहली जी ने भी शायद अपने समाज में श्रमिक वर्ग के लोगों की पत्नियों और युवा लड़कियों का जीवन दासी के समान ही देखा होगा, जिसके कारण शोषण के इस स्वरूप को उन्होंने अपनी रामकथा में स्थान दिया।

उपन्यास में चित्रित सभी नारी पात्र अपने–अपने क्षेत्रों में पीड़ित दिखाई पडती हैं। जिस समाज में पुरूष अपने आप को नारी से श्रेष्ठ समझते हैं, वहाँ अबला नारी पर अत्याचार होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। वनवास के समय राम जहाँ रूके थे, वहाँ कुछ ऐसा ही दृश्य राम को देखने को मिला। श्रमिक परिवारों में पुरूष अक्सर मदिरा पीकर पत्नी को आज्ञा देते और यदि किसी बात से वे अप्रसन्न हो जाते तो अपनी इच्छानुसार थप्पड़ों और घुंसों से पीटते। ऐसे में समाज या राज्य की ओर से भी कोई सुरक्षा या सहायता उन स्त्रियों को नहीं मिलती। कथा में नारी के ऊपर शोषण के स्तर का यह विचलित कर देने वाला स्वरूप भी वर्तमान समाज में अक्सर देखने को मिल जाता है; जो ये बताने के लिए काफी है कि आज समय जरूर बदला है; किन्तु न तो हमारा समाज बदला है और न ही नारी के शोषण का स्वरूप एवं सीमा ही बदली है।

कोहली जी के तत्कालीन समाज में शायद अत्याचार की शिकार बनी निर्दोष स्त्रियाँ समाज में ससम्मान जीने का साहस नहीं जुटा पाती थी या समाज उन्हें ससम्मान जीने का दूसरा मौका देता ही नहीं था। जबकि दोषी पुरूष को उसके कुकृत्यों के बावजूद निर्दोष मान लिया जाता। समाज द्वारा स्त्री–पुरूषों के लिए अपनाई गई इस दोहरी मापदंड की नीति को कोहली जी ने अपने पौराणिक राम कथा में सामाजिक चिंतक ऋषि विश्वामित्र के माध्यम से रखा है। जहाँ खुद विश्वामित्र, राम से इस मुद्दे पर कहते दिखते हैं कि– ''हमारा समाज इन संदर्भों में अभी उतना उदार नहीं है कि उन युवतियों को अपेक्षित सम्मान दें। मर्यादा के रूढ़ परिकल्पना में बँधा हुआ यह मानस यदि उन्हें पतित मानकर उनका अपमान कर बैठा तो? और उनमें से अनेक युवतियों में मुझे गर्भ के लक्षण भी दिखाई पड़े हैं। उनकी संतान के भविष्य के विषय में भी आशंकित हूँ, पुत्र।''[5] विश्वामित्र की यह आशंका कहीं न कहीं वर्तमान में भी परिलक्षित है। आज भी स्त्रियों को अपने और अपने अनचाहे गर्भ से उत्पन्न बच्चे के अस्तित्व को बचाने के लिए अपने ही समाज से लड़ना पड़ता है।

'दीक्षा' उपन्यास में वर्णित 'अहल्या प्रसंग' में शिलाखण्ड में परिणत हुई अहल्या ने भी कोहली जी के तत्कालीन समाज के उन स्त्रियों का चित्र प्रस्तुत किया है, जो निर्दोष होते हुए भी सामाजिक अभिशाप की आग में तपने को मजबूर हैं। निरपराध होते हुए भी अहल्या जैसी स्त्रियों को समाज से बहिष्कृत होकर जीवन जीना पड़ता है। गौतम बुद्ध की अनुपस्थिति में देव इंद्र द्वारा अहल्या का शिलभंग करना तथा इसके लिए अहल्या को ही दोषी ठहराते हुए इंद्र का यह कहना कि– ''पहले स्वयं बुला लिया और अब नाटक कर रही है।''[6] फिर समाज का इन्द्र की इस बात पर सहमति जताना, कहीं न कहीं समाज की उस व्यवस्था की पोल खोलता है, जहाँ यह माना जाता है कि नारी ही गलत होती और पुरूष हमेशा सही होता है।'' अहल्या प्रसंग के संदर्भ में के0 सी0 सिंधु ने अपनी पुस्तक 'रामकथा: कालजयी चेतना' में यह स्वीकारा है कि– लेखक ने अहल्या की कथा के साथ सामाजिक रूढ़ियों की बात जोड़कर भारतीय समाज में स्त्री के प्रति हो रहे अत्याचार की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। समाज में पीड़ित और तिरस्कृत वर्ग के उद्धार के लिए एक सशक्त नेतृत्व की आवश्यकता, धैर्य और साहस की आवश्यकता लेखक ने रेखांकित की है।''[7]

कोहली जी ने अपने 'अभ्युदय' उपन्यास में परतंत्र नारी

4. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग–1, 'अवसर' खण्ड, डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली, सं0 2014 पृष्ठ सं0 313

5. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग–1, 'दीक्षा' खण्ड, डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली, सं0 2014 पृष्ठ सं0 पृ0 83

6. पूर्ववत् , पृ0 सं0 83

7. के0 सी0 सिंधु, 'रामकथा: कालजयी चेतना',वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण,पृ0 सं0 37

के जिस स्वरूप का चित्रण किया है, उनसे अक्सर विवाह जैसे महत्वपूर्ण प्रसंगों में भी उनकी इच्छा जानने का प्रयत्न नहीं किया जाता है। विवाह संबंधी निर्णय पिता पर अवलम्बित होते हैं; फिर चाहें वह नारी उच्च कुल में ही क्यों न पैदा हुई हो। इस तरह रामयुग और कोहली जी के तत्कालीन समाज के उच्च और निम्न कुल में जन्मी नारियों की सामाजिक स्थिति में कोई भेद नहीं था। तत्कालीन समाज में नारी की परतंत्रता का एक और उदाहरण कोहली जी ने कौशल्या के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उन्होंने कौशल्या के माध्यम से पितृसत्तात्मक शासन व्यवस्था में नारी के अस्तित्वहीन स्वरूपों को परिलक्षित किया है, जिनका संपूर्ण बचपन पिता की, यौवन पति की तथा वृद्धावस्था पुत्र की शरण में व्यतीत होता है। 'दीक्षा' की पात्रा 'कौशल्या', नारी की इसी परवशता पर सोचती हैं कि -''मानव वंश में नारी पूर्णत: पति के अधीन है। उसका कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं है। यह वंश समाज में पितृ-सत्ता को उसकी पराकाष्ठा तक ले गया था। कौशल्या ने अपने मायके में भी यही देखा था और ससुराल में भी यही देख रही थी। वह व्यक्ति नहीं थी, वह उस वंश की पुत्र-वधु थी और उन्हें वहीं रहना था। परिवार के लिए, उसकी सुख-सुविधाओं के लिए उन्हें अपने व्यक्तित्व का बलिदान करना था।''[8] नारियों के प्रति आज भी समाज की यही बर्ताव है। वे उनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं मानते। अंधविश्वास एवं रूढ़िवादी से जड़ित यह समाज नारी को घर की चहारदीवारी के बीच कैद करके रखने में यकीन रखता है। पति के कार्यों में हस्तक्षेप करने से वर्जित करता है।

'अवसर' के एक प्रसंग में सीता का यह कहना है कि- उनकी सामाजिक उपयोगिता पूरी तरह शून्य है और उनकी आवश्यकताएँ आसमान को छू रही है। उन्हें भड़कीले वस्त्र चाहिए, चमकीले आभूषण चाहिए, प्रसाधन के लिए चंदन-कस्तुरी के छड़के भी उनके लिए अपर्याप्त है, चर्बी बढ़ाने के लिए दुनिया भर का गरिष्ठ और स्वादिष्ट भोजन चाहिए........[9] इस बात की ओर इंगित करता है कि राम और कोहली जी की तदयुगीन समाज की यह रुढ़ व्यवस्था नारी को उसका उचित मानवीय स्थान देने में किंचित भी इच्छुक नहीं था।

किसी भी समाज में नारियों की स्थिति और अधिक सोचनीय तब बन जाती है, जब रक्षक ही भक्षक बन जाता हैं। सेनापति बहुलाश्व के पुत्रों द्वारा निषाद स्त्रियों का शीलभंग करना, भोगवादी पुरूष प्रधान समाज के उस चेहरे को उजागर करता है जहाँ नारी को केवल भोग की वस्तु माना जाता है।

कोहली जी ने तद्‌युगीन समाज के वैसे परिवारों की स्त्रियों के दयनीय स्वरूपों का चित्रण किया है, जिनके हाथ में खुद सत्ता थी। वहाँ भी नारी असुरक्षित थी। बाली के द्वारा अपने ही भाई सुग्रीव की पत्नी रूमा का शीलभंग करना इस बात का प्रमाण था कि तत्कालीन समाज में कोई भी नारी खुद को सुरक्षित महसूस नहीं करती थी।

ऐसा नहीं है कि कोहली जी ने मात्र अहल्या, कौशल्या जैसी शोषित स्त्री पात्रों के ही चित्रों को खींचा है। वरन् उन्होंनें ऐसे स्त्री पात्रों के भी चित्र खींचे हैं, जिनमें वर्तमान समाज की स्त्रियों में शोषण के विरूद्ध क्रांति के स्वरों को जागृत करने की क्षमता विद्यमान है। नारी के सामाजिक लैंगिक विभेदीकरण की समस्या से उत्पन्न शोषणों एवं अत्याचारों को रोकने के लिए, सीता को क्रांतिकारी नारी के स्वरूप में चित्रित किया गया है। कोहली जी के रामकथात्मक उपन्यासों में चित्रित सीता को पितृसत्तात्मक समाज द्वारा बनाई गई नारी के निष्प्रयोजन भूमिका से दुखित होते दिखाया गया है। राम के साथ प्रशासनिक कार्यों में सहयोग न दे पाने पर उनका यह सोचना कि -''परिवार का ही नहीं सारे समाज का ढ़ांचा ही कुछ ऐसा है कि नारी कहीं शोभा की वस्तु है, कहीं भोग की, कहीं वह अत्यन्त शोषित है, कहीं परजीवी...... समाज से उसका कोई सीधा संबंध नहीं है।''[10] वर्तमान के पुरूष प्रधान समाज के प्रति आधुनिक जाग्रत नारी के विक्षोभ को प्रकट करने के साथ ही, उन्हें अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए विशेष आत्ममंथन करने पर बल देता है। वर्त्तमान समाज की शोषित नारियों में शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए प्रेरित करने के मकसद से ही कोहली जी ने सीता के अबला स्वरूप का प्रतिकार कर उन्हें शस्त्र चलाने, नाव चलाने के प्रशिक्षण के साथ-साथ युद्धाभ्यास और संघर्ष प्रतिरोध का प्रशिक्षण लेते दिखाया है। वर्तमान नारी की स्वतंत्र अस्तित्व की खोज में सीता का यह रूप बहुत ही सहायक है।

इतना ही नहीं कोहली जी ने वर्षों से चली आ रही परम्परागत नारी रूप और आधुनिक सोच रखने वाली नारी रूप के सम्मिश्रण से एक ऐसी नई सीता के रूप को गढ़ा है, जो रावण

8. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग-1, 'दीक्षा' खण्ड, डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली, सं0 2014 पृष्ठ सं0 24
9. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग-1, 'अवसर' खण्ड, डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली, सं0 2014 पृष्ठ सं0 212
10. पूर्ववत्, पृष्ठ सं0 207

द्वारा अपरहण किये जाने पर खुद रावण से शस्त्र माँगती है एवं उसे द्वन्द युद्ध के लिए ललकारती है। सीता का यह आधुनिक रूप वर्तमान नारी के अंदर शोषण के विरूद्ध खुद लड़ने की ताकत देता है। वर्तमान समय में नारी स्वातंत्र्य की माँग एवं स्त्री-पुरूषों के प्रति समाज की दोहरी मापदंड को खत्म करने की आवश्यकता को देखते हुए ही रामायण के पात्रों को एक नए रूप में गढ़ने की कोहली जी की यह कोशिश समाज से लैंगिक भेदभाव को खत्म करने तथा शोषण के विरूद्ध शोषितों को खुद आवाज उठाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ है। साथ ही रूढ़िवादी परंपरागत नारी आदर्श के स्वरूपों से नारी को मुक्त कराके, उनमें नारी क्रांति के ज्योति को भी जगाता है।

निष्कर्ष :- हिन्दी उपन्यासकार एक लम्बे समय से नारी से जुड़ी समस्याओं को अपने कथानक के माध्यम से उठाते आये हैं और साथ ही इनकी समस्याओं का निदान भी प्रस्तुत करते रहे हैं। नरेंद्र कोहली जी एक ऐसे ही उपन्यासकार हैं, जिन्होंने अपने रामकथात्मक उपन्यास 'अभ्युदय' में संकलित 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' खंडों के माध्यम से न सिर्फ रामयुगीन नारी की समस्याओं को उद्घाटित किया है, अपितु रामकथा के पौराणिक नारी पात्रों के माध्यम से अपने समाज की स्त्रियों की विचलित कर देने वाली शोषण के स्वरूपों से साक्षात्कार भी करवाया है। उन्होंने पौराणिक रामकथा के माध्यम से अपने समाज की नारियों के स्वरूपों का जो चित्र हमारे समक्ष खींचा है, वह कहीं न कहीं आज के समाज में भी प्रतिलक्षित होता है। रामयुगीन समाज में नारी की विचलित कर देने वाली स्थिति, वर्त्तमान समय में नारी उद्धार के लिए एक विशेष चिंतन की माँग करती है।

कोहली जी की रामकथा में रामयुगीन पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत अहल्या, कौशल्या जैसी नारी पात्रों को शोषित दिखाया गया है। आर्य शासन कर्मियों द्वारा निषाद स्त्रियों का यौन-उत्पीड़न करना हो या फिर देव इन्द्र द्वारा अहल्या का पति के अनुपस्थिति में शीलभंग किया जाना हो। कौशल्या का अपने ही ससुराल में परतंत्रता का जीवन व्यतीत करना हो या फिर कर्ज न चुका पाने के कारण लड़कियों को दासी बना कर रख लेना हो। राम के तत्कालीन युग में नारी के शोषण की ये सभी विचलित कर देने वाले स्वरूप, कोहली जी के तत्कालीन समाज के चित्रों को खींचते नजर आये हैं। इस तरह उनके उपन्यास के ये सभी नारी पात्र समाज में नारी के ऊपर हो रहें शोषण के स्वरूपों एवं सीमाओं का सही आकंलन प्रस्तुत कर, लैंगिक भेदभाव की गंभीरता को विचारने पर जोर देते हैं। इसके साथ ही पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था में नारी के स्थान का सही चित्र भी प्रस्तुत करते हैं।

शोषित पात्रों के चित्रों को खींचने के साथ ही कोहली जी ने सीता जैसी क्रांति नारी के चित्र को भी खींचा है, जो वर्तमान समाज की स्त्रियों में नारी क्रांति के स्वरों को जागृत करने की क्षमता रखती हैं। नारी के सामाजिक लैंगिक विभेदीकरण की समस्या से उत्पन्न शोषणों एवं अत्याचारों को रोकने में एवं नारी की स्वतंत्र अस्तित्व की खोज में सीता का यह रूप वर्त्तमान समय में बहुत सहायक है।

◆◆◆